5/8/22 Mor

Roll No. .....

Sr. No. of Question Paper	:	6061
Unique Paper Code	:	12051602_OC
Name of Paper	:	Hindi Nibandh Aur Anya Gadhyan Vidhayein
Name of Course	:	B.A. (Hons.) Hindi, CBCS (OC)
Semester	:	VI
Duration	:	3 Hours
Maxmium Marks	:	75

(इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1- निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए– 8+7=15

(क) प्रेम की भाषा शब्द–रहित है जीवन का तत्त्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण प्रभाव, शील, अचल–स्थिति–संयुक्त आचरण न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से गठा जा सकता है, न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से, अंजलि से, न कुरान से, न धर्म चर्चा से, न केवल सत्संग से। जीवन के अरण्य में घुसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौडे की मंद–मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

अथवा

अब एक प्राणी के प्रति दूसरे प्राणी के लोभ का प्रसंग सामने आता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं। यद्यपि किसी व्यक्ति की ओर प्रवृति भी जब तक एकनिष्ठ न हो, लोभ ही कही जा सकती है, पर साधारण बोलचाल में वस्तु के प्रति मन की जो ललक होती है उसे 'लोभ' और किसी व्यक्ति के प्रति जो ललक होती है उसे 'प्रेम' कहते हैं। वस्तु और व्यक्ति के विषय–भेद से लोभ के स्वरूप और प्रवृत्ति में कुछ भेद पड जाता है, इससे व्यक्ति के लोभ को अलग नाम दिया गया है। पर मूल में लोभ और प्रेम दोनों एक ही हैं इसका पता हमारी भाषा ही देती है।

(ख) जो समझता है कि वह दूसरों का अपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरा उसका अपकार कर रहा है, वह भी बुद्धिहीन है। कौन किसका उपकार करता है, कौन किसका अपकार कर रहा है? मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास–विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाए, बहुत अच्छी बात है; नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभिमान यदि गलत है, तो दुख पहुँचाने का अभिमान तो नितरां गलत है।

अथवा

बनारस का अपना एक रंग है, रईसी ठाट–बाट के साथ सादगी और मस्ती है। घाट पर गमछा पहने घूमना असभ्यता में शामिल नहीं है। यहाँ की लम्बी तंग गलियों में अमीर–गरीब के बीच में ज्यादा फासला रखकर चल ही नहीं सकते। शहर पर देहात का असर है, जगह–जगह भोजपुरी सुनाई देती है, लोग खड़ी बोली बोलते हैं

तो उस पर भी भोजपुरी का रंग रहता है। मेले–ठेले, सैर–सपाटा, सैलानियों के मनोरंजन के अनेक साधन हैं। बुढ़वा मंगल के मेले में रईसों के बजरों पर संगीत और सौन्दर्य की छटा गंगा की धारा पर उतराने लगती थी।

2. 'जुबान' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 15

अथवा

आचरण की सभ्यता की मूल संबेदना पर प्रकाश डालिए।

3. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में अतीत की जीवन स्मृति है। समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'वैष्णव की फिसलन' का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

4. सुभान खाँ का चरित्र–चित्रण कीजिए। 15

अथवा

आत्मकथा के तत्वों के आधार पर अपनी खबर का मूल्यांकन कीजिए।

5. संस्मरण 'अज्ञेय के साथ' में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

राहुल सांकृत्यायन घुमक्कड़ी को प्राचीन धर्म क्यों मानते हैं। स्पष्ट कीजिए।